निसन्देह, सामाजिक और आर्थिक आजादी की मन्जिल पर पहुँचने के लिये जनता elite पर भरोसा नहीं कर सकती, उसे स्वयं अपने पांव पर खड़ा होना होगा। निराश होने की जरुरत नहीं। देश में स्थान-2 पर शोषित लोग, पिछड़े वर्ग के लोग, हरिजन, आदिवासी, गरीब एवं बेरोजगार नवयुवकों ने सघर्ष चालू कर दिये हैं। आने वाली लोकसभा चुनावों के कारण, भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों ने जनता के हित की बातें कहनी आरम्भ कर दी है। साढ़े चार/पांच साल राज्य करने के बाद प्रधान मन्त्री को भी नेहरु रोजगार योजना, पंचायतों और नगरपालिकाओं को अधिकार देने की बातें याद आ गई हैं। मगर अर्थ व्यवस्था में बुनयादी परिवर्तन की बात अब भी नही की जा रही है। प्रधान मन्त्री को याद रखना होगा कि जनता जाग चुकी है। अब वे और उनकी पार्टी जनता की आंखों में धूल नही झोंक सकती। कहीं-कहीं विरोधी पक्ष की सरकारों में भाई-भतीजावाद बढ़ने लगा है। उन्हें भी याद रखना होगा कि जनता ऐसी बातें सहन नहीं करेगी।

मेरी राय है कि केवल चुनावी वायदों से काम नहीं चलेगा, जब तक कि मौलिक विषयों का निवारण न होगा। सियासी पार्टियों के लिये यह आवश्यक है कि वह काम करने के अधिकार को संविधान के बुनियादी अधिकारों में शामिल करवाये। इसी प्रकार के कई और संशोधन सविधान में जरुरी हैं। यह बीड़ा उत्तर भारतीय स्वतन्त्रता सैननी परिषद ने उठाया है जिसके द्वारा एक जन- जागरण का प्रोग्राम भी बनाया गया है।

जनता की परेशानियों और दुखों का कोई ठिकाना नहीं, परन्तु यह दुःख सच के नये जन्म को दर्शाता है, जैसे बच्चा होते समय हर गर्भवती महिला को कष्ट होता है।

हम 15 अगस्त ठीक तरीके से तब ही मनायेंगे जब हमारा ध्यान सियासी पड़ाव पर मजे उठाने की बजाय सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता की मन्जिल की ओर कूच करने की दिशा में होगा।

(मूलचन्द जैन)
प्रधान
उत्तर भारतीय स्वतन्त्रता सैनानी, परिषद।

मूल चन्द जैन
Ex. M.P.

माल रोड, करनाल
23.1.90

पूजनीय आचार्य श्री तुलसी जी,

सादरवन्दना

अणुव्रत वर्ष मनाने के सम्बंध में जिस प्राथमिक योजना प्रारूप की कापी मुझे मिली उसके लिखित पृष्ठो पर मैंने नम्बर डाल दिए हैं। कुल 18 पृष्ठ बनते हैं इसमें मेरी राय मे निम्न मुख्य सुधारों की आवश्यकता है :-

क— आपके मार्गदर्शन मे यह निर्णय लिया गया था कि अहिंसक समाज की रचना "सप्तसूत्री कार्यक्रमों मे से एक नही बल्कि सभी कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य होगा और उसके अर्न्तगत सात सूत्री कार्य होंगे, जिनमें" शोषण मुक्त समाज की स्थापना पहला कार्यक्रम होगा। इसके अनुसार संशोधन तो कर दिया गया है परन्तु ना इसकी व्याख्या की गई है ना हि दूसरे कार्यक्रमों की तरह इसे अलग शीर्षक देकर उसके अर्न्तगत किसी आईटम की और संकेत किया गया हैं। मेरी राय मे चौथा पृष्ठ (अहिंसक परिवार) अन्त में रखा जाए और उसके स्थान पर चौथे पृष्ठ पर (शोषण मुक्त समाज की स्थापना) का शीर्षक दे कर निम्न आईटम्स रखे जाऐं :-

1. "शोषण मुक्त समाज" पर किसी और भाषा की अच्छी पुस्तक का अनुवाद हिन्दी में कराया जाए। जैसे रस्किन की पुस्तक "Unto this Last". गांधी जी, विनोबा जी, काका कालेकर ने भी इस विषय पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। ब्राजील देश के प्रसिद्ध लेखक Pulo Friere की प्रसिद्ध पुस्तक "Pedagogy of the oppressed" कुछ पुस्तकें हैं जिनसे बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार अच्छे लेखकों द्वारा हिन्दी में इस महत्वपूर्ण विषय पर पुस्तक, Pamphlets आदि तैयार कराकर सस्ते दामों पर या मुक्त सभी पुस्तकालयों और शिक्षा सस्थाओं और सभी विधायकों और संसद सदस्यों को भेजे जावे। श्री एल०सी० जैन मैम्बर पलानिंग कमीशन की पुस्तक "Grass without roots" से बहुत कुछ लिया जा सकता है।

2. इस विषय पर विचार गोष्ठी अयोजित की जाए और प्रशिक्षण शिविर लगाये जाएं जिनमें इस बात पर सबसे अधिक बल दिया जाए कि शोषण मुक्त समाज की आवश्यकता क्यों है। बुद्धिजीवी ऐसी समाज की आवश्यकता को गहराई से महसूस करेंगे तो इसका निर्माण कैसे हो इसके बारे में सोचेगे। अभी तो प्रायः इसकी जरुरत ही नहीं समझते।

3. अणुव्रत शाखाओं और साधु-साधुओं के चर्तुमास के दिनों में इसकी चर्चा की जावे।

4. अणुव्रत शपथ फार्म पर "शोषण मुक्त समाज स्थापना" के लिए प्रयास करना और खुद शोषण न करना जोड़ा जाए।

5. शोषण मुक्त समाज के लिए आर्थिक व सामाजिक स्वतन्त्रता और समानता लक्ष्य प्राप्ति का पूरा प्रयास किया जाए। असमानता से उत्पन्न बुराईयों को खोल कर बताया जावे।

ख—"अहिंसक परिवार" शीर्षक के नीचे तीसरी लाईन में राष्ट्रीय विरोधी और "आंतकवादी" शब्दों के बाद "गतिविधियों" शब्द से पहले "शोषण और अलोकतांत्रिक शब्द" जोंड़े जाएं।

ग—"पर्यावरण और प्रदुशण शीर्षक" के नीचे सब कुछ बदलने की जरुरत है। आप से जो मार्गदर्शन मिला था उसके अनुसार यह Para बदला जावे और निम्न आईटमस और जोड़े जावें :-

1. सन 1947 से लेकर अब तक भारत के लगभग आधे जंगलात काटे जा चुके हैं। फलस्वरूप पहाड़ों से एकदम पानी सैलाब के रूप में नीचे उतरता है और हर साल तबाही मचाता है। इसी कारण बहुत स्थानों पर भूमिगत पानी स्त्रोत सूखते जा रहे हैं। परिस्थिति दिन प्रतिदिन बिगडती जा रही है। राष्ट्र के इस अमर स्रोत को फिर से प्रतिमाशाली बनाने में सहायता दी जावें।

2. सभी अणुव्रत धारी वृक्ष नियन्त्रण नियमों का पालन करेगे और सरकार से भी अनुरोध करें कि उनका पालन सख्ती से कराए।

ग—पृष्ठ सात पर "व्यसन मुक्ति" शीर्षक के नीचे निम्न जोड़ा जाए।महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की व्यसन मुक्ति समितियां बनाई जाए और सभी विद्यार्थियों को, नशीली दवाओं की हानियों की जानकारी दी जाए।

ङ. पृष्ट 5 लोकतन्त्र हैडीग के नीचे अन्त में नियम जोडा जायें :-

downloaded from moolchandjain.org

च—लोक तान्त्रिक विद्रन्द्रयणं अति आवश्यक है । स्टेटस जिला परिषद, पंचायतों की ओर अधिकार दिये जावें। इनके कर्मचारी उनके आधीन हों।

च—पृष्ठ तेरह (13) पर संगठन शीर्षक के नीचे आपके ध्यान मे लाना चाहता हूँ। कि बहुत से आधुनिक विचारको को रजिनमे श्री Gunar Myrdal प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, श्री एल॰सी॰ जैन वर्तमान सदस्य योजना आयोग और आंजील के लेखक जिसकी चर्चा मैंने उपर की हैं भी लगभग यह मान्यता है कि शोषण मुक्त समाज शेषकों द्वारा स्थापित नही की जा सकती, तथापि यह अवश्य माना गया हैं कि शोषण वर्ग में से कुछ व्यक्ति ऐसे निकलते रहे हो और भविष्य में भी निकलते रहेंगे जो शोषण मुक्त समाज की स्थापता के लिए पूरा प्रयास करते रहे हैं और करेंगे। मैंने यह चर्चा इस लिए की है कि जब इस महत्वपूर्ण विश्य को चर्चा लाढनू में 13-1-90 को हुई तो श्री देवेन्द्र भाई ने मुझे खुले शब्दों में कहा कि जिस वर्ग से हमारा सम्बन्ध है उसे वणिक व र्ग कहते हैं उनका व्यवसाय ही पैसा कमाना है चाहे किसी ढंग से भी कमाया जाऐ । उस समाज से आपका यह आशा करना कि वह शोषण मुक्त समाज की स्थापना करने में दिलचस्पी लेगी गलत है। यह शब्द मुझे सम्बोधित करते हुए कहे गये थे । मुझे आश्चर्य है कि और सदस्यो की भी लगभग यही राय थी। इस पर काफी वाद विवाद हुआ और मोटे तौर पर निर्णय हुआ कि अभी इस सम्बन्ध में कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सकता। केवल इस विषय पर विचार गोष्ठी हो सकती है। आपको याद होगा कि 14-1-90 को आप जब मार्गदर्शन के लिए मिलने आये और मैंने इस विषय की चर्चा पर कुछ समय लिया तो आप से मीटिंग के पश्चात श्री प्रकाश चन्द्र जैन ने मुझे कहा कि 'मैं इस विषय पर जरुरत से ज्यादा समय लेता हूं, दूसरे सदस्य इसे माईड करते हैं लेकिन मेरा लिहाज करते हुए बोलते नही''।

यह सुनकर मुझे दुःख हुआ। उपरोक्त बातें मैंने इसलिए लिखी हैं ताकि अपने हृदय की इस नयी पीड़ा की जानकारी आपको दूं । मेंरी राय में शोषण युक्त समाज के आधीन आज के युग के सभी ज्वलन्त प्रश्न आ जाते हैं । ऐसे समाज की स्थापना होगी और देश उसकी तरफ बढ़ेगा तो बेरोजगारी, आर्थिक व सामाजिक प्राधीनता व असमनता जैसे सभी प्रश्नों का समाधान होता जायेगा । परन्तु मुझे खेद है कि वह व्यापारी वर्ग प्रायः अभी इन बातों को सुनना हो नहीं चाहता। उपाध्यक्ष योजना बोर्ड हरियाणा रहते और उसके पश्चात मैंने हरियाणा पंजाब के कई स्थानों पर व्यापारियों को इस विषय पर सम्बोधित किया है। परन्तु बहुत कम दिलचस्पी उन्होने दिखाई। मै कैसे उन्हे समझाऊ कि अपने वर्ग को छोड़कर समूचे समाज में उनका सम्मान काफी कम हो गया है। उड़ीसा, बंगाल और अब आसाम से उन्हें निकाला जा रहा है। हरियाणा में उन्हें राजनीति में कोई स्थान नहीं। इस वर्ग की बढ़ती माली हालत से विवशकता और अधिक हो गयी है। फलस्वरूप समाज में तनाव और बढ़ गया है। सरकारी कर्मचारी विशेष कर पुलिस उनकी रक्षा दिखावे मात्र करती है उन्हे शोषक कहा जाने लगा है। इसका समाधान क्या है। हो सकता है मेरे कहने के ढग में काफी कमी हो इसलिए 15-1-90 को जब अचानक मुझे कुछ शब्द कहने को कहा गया तो मैंने आप से प्रार्थना की थी कि शोषण रहित समाज की स्थापना के विषय को आप अपने हाथ में लें इससे न केवल 'अहिंसा परमो धर्म'' सिद्धान्त की महिमा बढ़ेगी जैसा कि अहिंसा के सिद्धान्त पर चल कर महात्मा गांधी जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन सफल को बनाया तो सारे विश्व में अहिंसा की महिमा बढ़ी । इसी प्रकार सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग करके शोषण मुक्त समाज की स्थापना से अहिंसा की महिमा बढ़ेगी क्योंकि इस द्वारा आज के युग के ज्वलन्त प्रश्नों का समाधान होगा।

अणुव्रत वर्ष के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए मैंने अपना मन केबल उन प्रोग्रामो की पूर्ति के लिए बनाया जो युवाचार्य जी के आदेश पर मैंने उन्हें लिखकर दिये थे । उन ज्वलन्त प्रश्नों में "शोषण मुक्त समाज की स्थापना और लोकतन्त्र की रक्षा'' दो मुख्य विषय हैं इनके बारे में हम ठोस कार्य न कर सके तो अणुव्रत वर्ग का कार्य ढीला ही नहीं रूटीन, (Routin) का हो जायेगा। अन्त में यह सुझाव भी देना चाहता हूं कि साल खत्म होने पर सारे काम का मूल्यांकन किया जावे और अच्छे काम करने वालों को सम्मानित किया जावे।

मैंने अपने विचार काफी स्पष्टता से आपके सामने रखे हैं। इस लम्बे पत्र के लिए आपसे क्षमा चाहता हूं और आशा हूँ कि आपकी तरफ से इसका आशाजनक जबाब अवश्य मिलेगा ।

आपका

मूल चन्द जैन

मूल चन्द जैन,

करनाल

दिनांक 10-12-1978

आदरणीय चौधरी चरण सिंह जी,

सादर प्रणाम

आज सुबह तीन बजे नीद खुल गई, प्रार्थना में बैठा तो प्रेरणा मिली कि आपको निम्न पत्र लिखूं। मेरी आस्था है कि शुद्ध अंन्राकरण से सोचा, कहा और किया काम ईश्वर की इच्छा है। इस पत्र को ईश्वर इच्छा समझ कर लिख रहा हूँ।

गांधी जी के जन्म दिन के शुभ अवसर पर 2 अक्तूबर को आपसे मिला था। आपने बड़े ध्यान से मेरी बात को सुना और उम्मीद से भी ज्यादा मुझे टाईम दिया। मैं आपके सामने यह विचार रखने आया था कि नेहरू जी के जमाने से भारत का आर्थिक ढांचा मगरबी सरमायेदारनि प्रथ व्यवस्था के ढांचा पर ढाला जा रहा है। इससे विशमता, बेरोजगारी और गरीबी लाईन से नीचे होने वालों की गिनती कम होने की बजाय दिन व दिन बढ़ी है। भारत के गरीबों के लिए गांधी जी का बताया हुआ आर्थिक प्रोग्राम ही सच्चा मददगार हो सकता है। उस प्रोग्राम के आप सबसे बड़े समर्थक हैं। हाल ही में आपने जो इतिहासिक किताब लिखी है वो इसकी ताजा मिसाल है।

इससे पहले भी मैंने आपके विचारों को सुना था। इस किताब ने मुझे आपका दिली admire बना दिया है। गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल हो गया तो भारत के करोड़ों गरीबों की आर्थिक गुलामी की बेड़ियां आप सदा सदा के लिये काट देंगे। इतना महान कार्य वही महापुरुष कर सकता है जिसकी इस प्रोग्राम में निष्ठा हो और हकुमत में इसका सुअवसर हिस्सा हो। इसलिये मैंने यह विचार रखने की जुरअत की थी कि चाहे प्रधान मन्त्री आपको होम मिनीस्टरी दोबारा न आफर (offer) करें, लेकिन अगर वो बाइज्जत तरीके से आपको बजारत में लेने की पेशकश करते हैं तो आप उसे इस प्रोग्राम की खातिर न ठुकरायें आपने प्यार से मुझे समझने की कोशिश की कि मोरार जी भाई का रवैया ऐसा है कि उनके साथ बाईज्जत काम करना लगभग नामुमकिन बन गया है। मेरा ख्याल था कि मोरार जी भाई स्वयं बड़े गांधी भगत हैं, इसलिये गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल करने में ये रूकावट की बजाये मददगार साबित होंगे। आपके इस विचार पर कि होम विभाग छोड़ कर आप किसी और बिभाग के लिये तैयार हो गये तो लोग क्या कहेंगे? मैंने निवेदन किया था कि अब भी जनता में जहां आपके admirer हैं तो कुछ critic भी हैं। फिर भी रहेंगे। मुख्य बात है गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल कराने का इतिहासिक काम। इसे आप सफल बना सके तो कुछ लोगों को नासमझ की नुकताचीनी को कोई अहमियत नहीं देनी चाहिये। मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपके विचार न बदल सका। मगर मुझे आशा थी कि कोई न कोई बाइज्जत रास्ता जरुर निकलेगा और भारत इन्दिरा की फिर से उभरती तानाशाही में बच सकेगा। मेरा यह भी ख्याल था कि पिछले चुनाव के मौके पर जो सागर मथम हुआ उससे जनता राज्य रूपी अमृत को पीने वाले तो बहुत हो गये। इस मथन से जहर पैदा हुआ (जनता पार्टी के छोटे बड़े लोगों में जो अहंकार बढ़ा) इस अहंकार रूपी जहर को पीने वाला भी तो कोई महापुरुष इस देश में निकलेगा। ईश्वर से मेरी प्रार्थना थी और है कि आप ऐसे महापुरुष सिद्ध हों। इसलिये 5-12-78 को मैंने आपको निम्न तार दिया :—

"Your numerous admirers and followers of Gandhiji's economic programme request you to drink the poison as Mahadev did in our mythology when ocean was churned. Numerous Gods were (and are) anxious to drink the Amrit produced. Only those save humanity and their country who drink cup of poison. None else can implement Gandhiji's economic programme. For its sake and country's poor and democracy even one's ego has to be suppressed."

मुझे पूर्ण आशा थी कि आप अपने आर्थिक प्रोग्राम को सफल बनाने के लिये medicators के निकाले हुये रास्ते को अपना कर अपनी पूरी बात न माने जाने के बावजुद बजारत में शामिल होने का जहर पी लेंगे। मगर विधाता को कुछ और मंजूर है। शायद आप और बहुत जहर पीने लगे हैं।

मैं इस सारे दर्दनाक नाटक को गीता माता की कसौटी पर परखता हूँ तो घबरा सा जाता हूं। जहाँ तक मैंने गीता को समझा है, मनुष्य साम्य बुद्धि से, आसक्ति रहित हो कर फल आशा छोड़ कर, और लोक संग्रह की दृष्टि से कर्म करे, तो उसे ऐसे कर्म का दोष नही लगता आपने जरूर इन चार कसौटियों का ध्यान रखते हुये यह ऐतिहासिक फैसला किया होगा मगर आप मुझे क्षमा करेंगे कि मेरी समझ में यह फैसला नही आया।

आदर के साथ

आपका

(मूल चन्द जैन)

downloaded from moolchandjain.org